रक्तदान – महादान

प्रस्तावना जिस प्रकार किसी प्राणी को जीने के लिए सांस लेना आवश्यक है उसी प्रकार शरीर में भी रक्त की उतनी ही उपयोगिता है। रक्त की कमी से शरीर दुर्बल बनता है और अंततः मृत्यु निश्चित रहती है। यदि कोई किसी व्यक्ति की मृत्यु को टाल सकता है तो वह ईश्वर का दूसरा रूप होता है और यदि हम ईश्वर स्वरूप बनना चाहते हैं और अपने जीवन को सार्थक बनाना चाहते हैं तो यह संभव है रक्तदान द्वारा। अतः रक्तदान एक ऐसा दान है जिसका कोई मूल्य नहीं होता अर्थात् अमूल्य होता है, क्योंकि किसी के प्राणों की कोई कीमत नहीं होती।

रक्त की संरचना जिस वस्तु का हम दान करते हैं हमें उस के बारे में पूर्ण रूप से जानकारी होना भी आवश्यक है। अतः इस अनुच्छेद में रक्त की संरचना वर्णित है। रक्त गाढ़ा, स्वाद में नमकीन क्षारीय, द्रव होता है, यह मुख्य रूप से दो भागों से मिलकर बना होता है।

(अ) **प्लाज्मा** : यह हल्के पीले रंग का होता है रक्त का 55 से 60 प्रतिशत भाग इसी का बना होता है। इसका 90 प्रतिशत भाग जल निर्मित होता है तथा शेष 10 प्रतिशत में अन्य कार्बनिक एवं अकार्बनिक पदार्थ होते हैं। इसको तीन भागों में बाँटा गया है।

1. लाल रूधिर कणिकाएं
2. श्वेत रूधिर कणिकाएं
3. प्लेटलेट्स

लाल रूधिर कणिकाएं वास्तव में हल्के पीले रंग की होती हैं ये लाखों की संख्या में मिलने पर लाल रंग की दिखाई देती हैं। इनमें केन्द्रक अनुपस्थित हरता है।

श्वेत रक्त कणिकाएं लाल रक्त कणिकाओं से आकार में कुछ बड़ी होती हैं और इनमें केन्द्रक भी पाया जाता है।

(ब) **रूधिराणु** : शरीर के रक्त का शेष 40 प्रतिशत भाग इन्हीं कणिकाओं का बना होता है यह भी रक्त में उतना ही आवश्यक होता है जितना कि प्लाज्मा की भूमिका रहती है।

रक्तदान किसे करना चाहिये

पूर्णरूप से स्वस्थ्य धैर्यवान, मानसिक रूप से परिपक्व एवं जो व्यसन आदि में लिप्त न हो उसे ही रक्तदान करना चाहिए। क्योंकि जो इस प्रकार के विकारों में लिप्त रहता है उसका रक्त संक्रामक हो जाता है और संक्रामक रक्त, ग्राही को मृत्यु की नींद भी सुला सकता है।

इसके अतिरिक्त हमें इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि हमारा रक्त-समूह कौन सा है और हम किस समूह वाले को दान कर रहे हैं। क्योंकि किसी भी व्यक्ति का रक्त किसी को भी नहीं चढ़ाया जा सकता है। रक्त-समूहों को मुख्य रूप से चार समूहों में बाँटा है। ए, बी, एबी, व ओ।

इनमें से ए वाला केवल ए को बी वाला केवल बी को ही दे सकता है।इसमें एबी रक्तसमूह सर्वग्राही होता है यह किसी भी रक्त समूह को ग्रहण कर सकता है एवं ओ यह सर्वदाता होता है यह किसी भी रक्त समूह वाले व्यक्ति को दे सकता है। अतः रक्तदान करते समय हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि हम किस स्थिति में हैं एवं किस रक्त समूह वाले व्यक्ति को रक्तदान कर रहे हैं।

रक्तदान के प्रकार

रक्तदान मुख्य रूप से तीन प्रकार से किया जा सकता है-

1. डी. पी. टी.
2. एक्सचेंज ऑफ ब्लड
3. स्टोरेज ऑफ ब्लड इन ब्लड बैंक

1. **डी. पी. टी.** - इसका अर्थ होता है डायरेक्ट टू पेशेन्ट, अर्थात इस प्रक्रिया में साक्षात रूप से रक्त को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को चढाया जाता है।
2. **एक्सचेंज ऑफ ब्लड** - इस प्रक्रिया में यह होता है कि यदि रक्त देने वाले अनेक व्यक्ति हों परंतु रक्त समूह रक्त ग्राही के रक्त समूह से न मिले, तो उनका रक्त निकालकर उसे ब्लड बैंक में जमा करके जिस समूह वाले रक्त की आवश्यकता है उसे लेकर उस व्यक्ति को चढ़ाया जाता है।
3. **स्टोरेज ऑफ ब्लड इन ब्लड बैंक** - इस प्रक्रिया में केवल रक्त को दान किया जाता है। जैसे कि जो साधारणतया विभिन्न कैम्पों का आयोजन होता है वहाँ इस प्रक्रिया द्वारा रक्तदान होता है।

राष्ट्र के उत्थान में रक्त की महत्ता

व्यक्तियों से मिलकर समाज और समाज से मिलकर राष्ट्र का निर्माण होता है। हम रक्तदान द्वारा किसी के प्राणों की रक्षा करते हैं तो वह राष्ट्र के प्राणों की रक्षा के तुल्य है। राष्ट्र का उत्थान तभी होगा जब समाज संगठित व स्वस्थ होगा। समाज द्वारा किए गए प्रगति के क्षेत्र में वांछित कार्य ही राष्ट्र के उत्थान में सहायक होते हैं।

भ्रांतियाँ एवं समाधान

कई लोग इस भ्रम में रहते हैं कि रक्तदान करने से शरीर में दुर्बलता आती है और इससे बीमारी का खतरा रहता है। लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है। न ही रक्तदान से शरीर दुर्बल होता है और न ही किसी प्रकार की बीमारी के होने का भय रहता है। मानव शरीर में 4 से 5 लीटर तक रक्त रहता है और यदि इसमें से 300 से 350 मिली. यदि रक्त दान भी कर दिया तो उससे कोई प्रभाव नहीं पडता क्योंकि ये तो समुद्र से एक बूँद निकालने के बराबर है और इस रक्त की आपूर्ति भी ती से साढे तीन माह में हो जाती है। इसके समाधान की कोई दवा नहीं है इसके लिए तो हमे हमारे मस्तिष्क में पल रहे इस विकार को ही नष्ट करना होगा।

उपसंहार

इस प्रकार आप रक्तदान न करके अपने जीवन को व्यर्थ ही गंवा देते हैं। यदि हमने मानव योनि में जन्म लिया है तो हमें मानव समाज के उत्थान में पहल करना चाहिए। यही हमारे जीवन का सार है और यही मोक्ष का रूप है। वास्तव में मोक्ष यही तो है आपके जाने के बाद (मृत्यु के बाद) भी लोग आपको याद रखें। रक्तदान अन्य सभी दानों से बढ़कर है, क्योंकि इससे किसी के जीवन को बचाया जा सकता है। इसलिए ही इसे महादान कहा गया है। अतः हमें प्रण करना चाहिए कि हमें भी रक्तदान करके राष्ट्र के उत्थान में सहभागी होते हुए किसी के प्राणों की रक्षा करना है।